Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 11544204

Roll No. 23261028043
Total Mark 63/75.00

Exam BA_V_ODD_EXAM_NOV_2025
Subject A080503T - International Economics

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5						
1B	4/5						
1C	4/5						
1D	4/5						
1E	4/5						
1F	4/5						
1G	4/5						
1H	4/5						
1I	4/5						
2	0/15						
3	0/15						
4	0/15						
5	13/15						
6	14/15						
7	0/15						
8	0/15						
9	0/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

Date of Exam: 3/12/25 Shift: III Room No.: 22
Paper Code: A0805-03T Subject: Economics Year/Sem.: 5th
Name of Candidate: Devansh Pandey
Roll No.: 2 3 2 6 1 0 2 8 0 4 3

Signature of Candidate | Signature of Invigilator | COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks
Total Marks in Words

A 0 8 0 5 0 3 T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course: BA
Session: 2025-26 Year/Semester: 5th
Subject: International Economics

Paper Code: A 0 8 0 5 0 3 T

Exam Date: 0 3 1 2 2 0 2 5

Name of Candidate: DEVANSHPANDEY

Father's Name: SATYAPRAKASHPANDEY

महाविद्यालय का कोड College Code: KN04

परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: KN04

परीक्षा का प्रकार Type of Exam: संस्थागत Regular ● | भूतपूर्व छात्र Ex Student ○ | व्यक्तिगत Private ○ | बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.: 11544204

A 0 8 0 5 0 3 T
Paper Code

नामांकन संख्या Enrollment Number: C S J M A 2 3 0 0 0 1 0 4 5 1 7

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 3 2 6 1 0 2 8 0 4 3

पेपर कोड Paper Code: A 0 8 0 5 0 3 T

Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पत्र के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें। 2. बॉक्स में भरे जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

Correct method	Incorrect method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ⊘

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्र में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर क निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा क कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Pape Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of dama in your answer script, if found than change the answer scr immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e. Subject Code. Subject Name and Question of the Questi Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement the exam, so that it can be corrected in TIME. After that n corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over pape should fill in status as Carry Over. Those appearing as E Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्दिष्ट स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कोपी, पुस्तक या सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संशोधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटफिक केल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूमाले न रखे न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

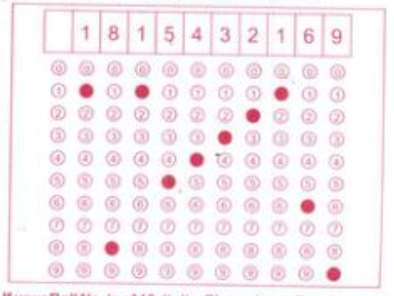

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columr

A 0 8 0 5 0 3 T

Section → 'A'

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(a)

तुलनात्मक लागत लाभ सिद्धांत –

तुलनात्मक लागत लाभ सिद्धांत का प्रतिपादन डेविड रिकार्डो द्वारा किया गया था। इनके इस सिद्धांत द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया था कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार लागतों में होने वाले लाभ के अंतर के कारण होता है। इन्होंने अपने सिद्धांत के लिए कुछ मान्यताएं भी प्रस्तुत करीं जो निम्नलिखित है –

मान्यताएं –

1) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार दो देशों के मध्य हो रहा है।

2) उत्पादन में उत्पादन साधन के रूप में केवल एक कारक श्रम है।

3) दो वस्तुओं में लागतों के अंतर के कारण व्यापार होगा।

4) श्रम के मूल्य सिद्धांत पर इन्होंने अपने सिद्धांत को प्रतिपादित किया।

5) आंतरिक क्षेत्रों में साधनों में गतिशीलता संभव है।

6) अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में साधनों को गतिहीन माना गया है।

7) उत्पादन के लिए संसाधनों में भिन्नता है।

Do Not Write anything in this Portion

इस प्रकार उपर्युक्त मान्यताओं को आधार बनाकर रिकार्डो ने अपने तुलनात्मक लागत लाभ सिद्धांत को प्रतिपादित किया।

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1 (b)

निरपेक्ष लागत लाभ सिद्धांत : एडम स्मिथ

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में वणिकवादियों के विचारों का प्रतिरोध करते हुए तथा क्लासिकल विचारों को रखते हुए एडम स्मिथ ने अपनी सर्वविख्यात पुस्तक "An inquiry into the nature and causes of Wealth of Nations" में इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया था।

मान्यताएं —
1. दो देशों के मध्य व्यापार।
2. उत्पादन साधन के रूप में श्रम।
3. उत्पादन लागतों में अंतर।
4. आंतरिक श्रम में गतिशीलता।
5. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर श्रम आगतिशील।
6. मूल्य का श्रम सिद्धांत का अनुपालन।

एडम स्मिथ के अनुसार,
दो देशों के मध्य व्यापार का कारण उत्पादित होने वाली वस्तुओं में निरपेक्ष लागतों में अंतर है। चूंकि सभी देशों में सभी संसाधन

नहीं होते इसलिए प्रत्येक देश उन उत्पादों का उत्पादन करे जिसके लिए उसे निरपेक्ष लागतों में लाभ प्राप्त हो रहा हो।

उदा० → यदि दो देश A तथा B निम्न प्रकार से प्रति श्रम 10 घण्टे के अनुसार उत्पादन करे तब

देश	गेहूँ	जौं
A	10	20
B	20	10

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट वर्णित है कि देश A को जौं के उत्पादन में अधिक लागत लग रही है जबकि B को गेहूँ में अतः देश A को गेहूँ का उत्पादन करना चाहिए जबकि देश B को जौं जिससे उन्हें निरपेक्ष लाभ प्राप्त हो सके।

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1(c)

संरक्षण – संरक्षण से आशय उस प्रक्रिया से है जिसमें विभिन्न देशों द्वारा इसके यहाँ आयातों को सीमित करने के लिए तथा आंतरिक उद्योगों को संरक्षित करने के लिए प्रशुल्क (tariff) या कोटा (Quota) लगाया जाता है।

इस प्रक्रिया के द्वारा विकासशील देशों को विकसित स्तर की ओर ले जाना आसान हो जाता है।

Do Not Write anything in this Portion

संरक्षण की नीति की आवश्यकता -

विकासित देशों में प्राय निम्न कारणों से संरक्षण आवश्यक हो जाता है -

① आयात में कमी - आयात में कमी लाने के लिए, ताकि उद्योग संरक्षित रहे, संरक्षण करते हैं।

② निर्यात में वृद्धि - निर्यात में वृद्धि के द्वारा विकासशील देश विकास की ओर जाते हैं।

③ व्यापार शर्तें → व्यापार शर्तों के अनुकूल होने के लिए संरक्षण आवश्यक हो जाता है।

④ भुगतान संतुलन → भुगतान संतुलन में व्यापार को बढ़ाने के लिए तथा विकास के लिए आवश्यक हो जाता है। इसलिए यह अनुकूल होना चाहिए

⑤ उद्योगों को संरक्षण → यह एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो निर्यात को प्रोत्साहन देती है।

इस प्रकार संरक्षण विकास के लिए बेहद महती आवश्यक नीति हो जाती है।

Paper Code A 0 8 0 5 0 3 T

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(d)

SAFTA और BRICS -

SAFTA और BRICS अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देशों के मध्य साझेदारी, व्यापार तथा संतुलन बनाए रखने के लिए बनाए गए थे। ये संघ निम्न उद्देश्यों की परिपूर्ति हेतु निर्मित किए गए -

उद्देश्य -

① अंतर्राष्ट्रीय सहयोग - साफ्टा और ब्रिक्स का उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग को बढ़ाकर विभिन्न समस्याओं को सुलझाना है।

② व्यापार संवर्द्धन - अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन देने तथा प्रशुल्क और अभ्यक्ष से संरक्षण के लिए ये देश पास में आए

③ आर्थिक साझेदारी - ब्रिक्स और साफ्टा आपस में न केवल व्यापार बल्कि अन्य भू-राजनीतिक समस्याओं के समाधान हेतु आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते हैं।

④ डी-डॉलराइजेशन (De - Dollarisation) - बढ़ते

Paper Code

A 0 8 0 5 0 3 T

06

वैश्वीकरण के इस युग में डॉलर की मांग वृद्धि कम करने के लिए भी ये देश अपनी स्वयं की मुद्रा का प्रयोग के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

5) दक्षिणी गोलार्द्ध में एकता – मुख्यतः भौगोलिक विभाजन जो संसाधनों को भी विभाजित करता है, मैं संसाधनों का प्रचुर प्रयोग करने के लिए इनका निर्माण किया गया।

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1 (c)

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष : भूमिका और कार्य

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात आयी आर्थिक समस्याएँ को हल करने के लिए ब्रेटन वुड्स समझौते के अंतर्गत 27 Dec 1945 में किया गया था।

भूमिका :- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा विभिन्न देशों (सदस्य देश) को उपलब्ध कराई जाने वाली अल्पकालिक वित्तीय उपलब्धता उन देशों में वृद्धि लाने में सहायक है साथ ही केवल यही नहीं बल्कि राष्ट्रीय आय में होने वाली वृद्धि इसके द्वारा बनाए

गए नियमों के अनुपालन, अनुकरण से प्राप्त होती है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भुगतान संतुलन तथा व्यापार संतुलन को अनुकूलित करने में भी योगदान दिया।

कार्य –

① IMF के द्वारा वित्तीय उपलब्धता के द्वारा विभिन्न देश अपनी समस्याओं (आंतरिक तथा बाह्य) को सुलझा सके।

② इसके द्वारा व्यापार को बढ़ाने पर भी बल दिया जाता है।

③ IMF का एक और प्रमुख कार्य विनिमय दर को नियंत्रित करना तथा स्थिर करना है।

④ IMF के द्वारा कुछ नियम बनाए जाते हैं जो सदस्य देशों के लिए अनिवार्य होते हैं।

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1 (f)

लियोन्टीफ विरोधाभास –

लियोन्टीफ विरोधाभास को अर्थशास्त्री लियोन्टीफ ने हेक्सचर ओहलिन थ्योरम के विरोध में प्रस्तुत किया था। इनका मानना था कि जैसा कि हेक्सचर – ओहलिन

Paper Code A 0 8 0 5 0 3 T

Do Not Write anything in this Portion

प्रमेय कहती है दो देशों में उनके संसाधनों की प्रचुरता के आधार पर व्यापार किया जाता है अर्थात पूंजी प्रचुर देश पूंजीगत वस्तुओं का उत्पादन करता है तथा उसका निर्यात करता है जबकि श्रम प्रचुर देश श्रम आधिक्य वाली वस्तुओं का उत्पादन करता है और निर्यात करता है। यह प्रक्रिया वस्तुतः सही है परंतु इसका विपरीत स्थिति भी संभव है। सन 1957 में किए गए अध्ययन के आधार पर लियोन्टीफ ने कहा था कि "जो देश पूंजी प्रचुर है वे पूंजीगत वस्तुओं का आयात भी करते हैं और निर्यात भी करते हैं वहीं श्रम प्रचुर देश भी न केवल श्रम प्रचुर वस्तुओं का उत्पादन और निर्यात करते हैं बल्कि वे श्रम प्रचुर वस्तुओं का आयात भी करते हैं।"

इस प्रकार हेक्सचर ओहलिन सिद्धांत के विपरीत लियोन्टीफ ने इस सिद्धांत को प्रस्तुत किया। आगे क्रुगमैन ने भी इसी के आधार पर अपने नये व्यापार के सिद्धांत को प्रतिपादित किया था।

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1 (g)

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश -

"प्रत्यक्ष विदेशी निवेश से आशय उस निवेश से होता है जिसमे कोई बाहर देश की कम्पनी किसी दूसरे देश में किसी कंपनी का स्वामित्व ले लेती है या फिर दूसरे देश अपनी कंपनी ही स्थापित कर देती है।"

इस प्रकार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश दूसरे देशों में निवेश को बल देकर निम्न लाभ उत्पन्न करते हैं -

1. रोजगार उत्पन्न करना।
2. उत्पादन को प्रोत्साहन।
3. संसाधनों का प्रचुर प्रयोग।
4. राष्ट्रीय आय में वृद्धि
5. मानव पूंजी का विकास।

FDI को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा कदम भी उठाए जाते हैं यह निवेश दो माध्यमों से हो सकता है।

FDI →
- Automated route के द्वारा
- Government Approval के द्वारा।

इस तरह FDI निम्न उपक्रमों का प्रयोग करके देशों से लाभांश कमाते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 8 0 5 0 3 T

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1(h)

गैर-प्रशुल्क बाधा :-

गैर प्रशुल्क बाधाओं से तात्पर्य उस बाधा से है जो प्रशुल्कों के अतिरिक्त विभिन्न देशों के द्वारा संरक्षण हेतु अपनायी जाती है। गैर प्रशुल्क बाधाएं प्रशुल्क बाधाओं की ही भाँति न केवल संरक्षण देती हैं बल्कि सरकारी राजस्व मे भी वृद्धि करती है ये निम्न प्रकार हैं –

(1) निर्यात सब्सिडी : कोई देश अपने उद्योगों को निर्यात सब्सिडी प्रदान करता है ताकि अन्य देशों में निर्यात के माध्यम उद्योगों को संरक्षण प्रदान किया जा सके।

(2) स्वैच्छिक निर्यात रुकावट (VER) – इसके द्वारा सरकारी समझौता के द्वारा देश निर्यातों मे कमी लाने का प्रयास करते हैं।

(3) कोटा प्रणाली : आयात-निर्यात कोटा लगाकर भी प्रशुल्क भाँति संरक्षण प्रदान किया जाता है जिससे देश विकास करते हैं।

(5) अंतर्राष्ट्रीय कार्टेल :- देशों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय संघों के निर्माण के द्वारा आयात पर प्रतिबंध लगाए जाते हैं।

(6) सरकारी नीति → सरकारी यह नीति भी बना सकती है किसी देश में लाइसेंसिंग के प्रतिबंधन के द्वारा कितना आयात- निर्यात किया जा सकता है।

इस प्रकार उपर्युक्त गैर प्रशुल्क बाधाओं के द्वारा आंतरिक उद्योगों को संरक्षण प्रदान करने की पुनः तथा सतत प्रयास करती है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(i)

अंतर्राष्ट्रीय ऋण :-

"अंतर्राष्ट्रीय ऋण से आशय उस कर्ज से होता है जो किसी देश द्वारा संस्थाओं (अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं) संघों अथवा देशों द्वारा अपने आंतरिक विकास या आर्थिक समस्याओं को हल करने के लिए लिया जाता है"

इस धन राशि का प्रयोग जो विभिन्न देश द्वारा ऋण के रूप में ली जाती है, निम्न उपलब्धि- उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है-

Do Not Write anything in this Portion

① आर्थिक विकास के लिए
② व्यापार संवर्द्धन के लिए
③ भू-राजनीतिक तनाव को देश से दूर रखने के लिए
④ अन्य ऋणों की पूर्ति के लिए
⑤ महामारी के समय देश की हालत के सुधार के लिए।

इन ऋणों की उपलब्धि निम्न संस्थाओं द्वारा की जाती है।

① World Bank (IBRD)
② IMF
③ ADB (Asian Development Bank)
④ विभिन्न यूनियन आपसी सहयोग

इस प्रकार यदि इन ऋणों का समय से भुगतान नहीं किया जाता है देश पीछे जाने लगता है तथा सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि वैश्विक शांति तथा कुशल आवंटन बना रहे। जिससे देशों के मध्य आर्थिक सहयोग को बल मिले।

Section :- 'B'

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 5

भुगतान संतुलन :- (BOP)

भुगतान संतुलन विभिन्न देशों के साथ होने वाले व्यापार का एक लेखा जोखा होता है इसे निम्न रूप में परिभाषित कर सकते हैं।

"भुगतान संतुलन विभिन्न देशों के मध्य होने वाले आयात - निर्यात या भुगतान और प्राप्तियों का लेखा - जोखा होता है जो कि एक निश्चित समय में इस देश के निवल निर्यात को भी बताता है।"

भुगतान संतुलन के लिए आवश्यक है कि निम्न दो चीजों का आकलन किया जाए। चूँकि यह दोहरी लेखा पद्धति पर आधारित होता है इसलिए यह कहा भी जाता है कि -

↔ "भुगतान संतुलन सदैव संतुलित रहता है"

भुगतान संतुलन में लेनदारियों तथा देनदारियों का वर्णन किया जाता है जिनका कुल अंतर 0 आता है। इसमें निम्न 2 घटकों को लेते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

BOP

- Current A/C (चालू खाता)
- Capital A/C (पूँजी खाता)

चालू खाता

- दृश्य वस्तुएं → इसमें वस्तुओं के लेनदेन का आकलन करते हैं।
- अदृश्य वस्तुएं
  - → सेवाएं
  - → विप्रेषण
  - → कारक आय

उपर्युक्त वर्णित तथ्यों का आकलन करते हैं।

दृश्य वस्तुएं - दृश्य वस्तुओं में शब्द: वस्तुओं के लिए आयात-निर्यात की गणना की जाती है।

अदृश्य वस्तुएं:

① सेवाएं - सेवाओं का आयात-निर्यात

② विप्रेषण - विप्रेषण (Remittence) का आयात-निर्यात

③ कारक आय → कारक आय (factor income) का आयात-निर्यात

पूँजी खाता

ऋण
इसमे ऋणों के भुगतान - प्राप्तियों का वर्णन होता है

निवेश
→ FDI
→ FPI
विदेशी निवेशों में किए गए भुगतान - प्राप्तियां।

ऋण → भुगतान संतुलन की दिशा में विदेशों से लिए गए ऋण तथा दिए गए ऋणों की गणना करते हैं।

निवेश → निवेश में विदेशों में किए गए निवेश तथा विनिवेश की गणना की जाती है, जैसे → FDI, FPI

उपर्युक्त वर्णित चालू खाते और पूंजी खातों के अंतर्गत आने वाली मदों में किए जाने वाले भुगतान तथा प्राप्तियों के साथ आकलन द्वारा भुगतान संतुलन की गणना की जाती है।

चूंकि देशों में भुगतान संतुलन के विपरीत होने की समस्या है के बड़ी समस्या जिससे क्योंकि इससे सरकार इसे ही हल करने में धन को लगाती रहती है जबकि वास्तविक समावेशी विकास पिछड़ जाता है इसलिए निवेश में बाहे लाकर भुगतान संतुलन को प्रतिकूल होने के लिए से बचाने के

Do Not Write anything in this Portion

लिए निम्न सुधार या उपाय किए जाते हैं

① अवमूल्यन - कोई देश अपने मुद्रा के मूल्य को बढ़ाकर या अवमूल्यन करके भुगतान संतुलन को अनुकूलित करने की प्रयास करता है।

② फारेक्स रिजर्व (Forex Reserve) :-
फारेक्स रिजर्व में कमी लाकर भी देश की केंद्रीय बैंक मुद्रा आपूर्ति बढ़ाकर भुगतान संतुलन में प्रतिकूलता की स्थिति को समाप्त कर सकती है।

③ आयात - प्रतिस्थापन - आयात प्रतिस्थापन के माध्यम से जिन वस्तुओं का आयात किया जाता तो उसके आयात को कम करके बाकि उपयोगों को बढ़ाकर भुगतान संतुलन अनुकूलित किया जा सकता है।

④ मौद्रिक उपागम (Monetary Approach)
मौद्रिक क्रियाओं के द्वारा भी देश की केंद्रीय बैंक भुगतान संतुलन को प्रतिकूल होने से बचा सकती है। इसे एक महत्वपूर्ण संक्रिया के द्वारा लागू करा जाता है जहां

मुद्रा आपूर्ति में ~~कमी~~ परिवर्तन लाकर आयात कम किया जाता है।

⑤ अवशोषण उपागम (Absorption Approach)

अवशोषण उपागम द्वारा सरकार खर्च में कमी कर तथा राष्ट्रीय आय को बढ़ाकर भी भुगतान संतुलन में प्रतिकूलता आने से इसे बचा सकती है।

$Y = C + I + G + (X - M)$

$Y = A + B$ A → Absorption, B → (X-M)

$B = Y - A$

जब $Y > A$ → अवमूल्यन सफल

$Y < A$ → अवमूल्यन असफल

⑥ लोच उपागम (Elasticity Approach)

मार्शल - लर्नर शर्त -

अवमूल्यन की सफलता अर्थात् भुगतान संतुलन अनुकूल तभी हो सकता है जब आयात और निर्यात की लोचों का योग 1 से ज्यादा हो।

$$e_m + e_x > 1$$

e_m = आयात की माँग लोच

e_x = निर्यात की माँग लोच

इस तरह उपर्युक्त सांकेतिकों के द्वारा भुगतान संतुलन को प्रतिकूलित होने से बचाया जा सकता है।

Do Not Write anything in this Portion

Section 'C'

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 6

हैक्सचर - ओहलिन सिद्धांत :-

हेक्सचर ओहलिन सिद्धांत रिकार्डो द्वारा दिए गए तुलनात्मक लागत सिद्धांत का विरोध नहीं करता है बल्कि यह उस सिद्धांत की प्रतिपूर्ति करता है रिकार्डो का मानना था कि लागतों में अंतर व्यापार को जन्म देती है जबकि हेक्सचर ओहलिन ने कहा यह सही है लागतों में अंतर व्यापार को जन्म देती है परंतु वास्तविक रूप में संसाधनों की गहनता या प्रचुरता भी व्यापार को जन्म देती है।

हेक्सचर ओहलिन ने निम्न मान्यताओं के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का यह सिद्धांत प्रतिपादित किया था -

मान्यताएँ :-

① अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रमुखतः 2 देशों के मध्य होगा।

② उत्पादन साधन के रूप में 2 साधन श्रम और पूंजी ली जाएगी।

③ दो वस्तुओं के मध्य व्यापार संभव होगा।

2 × 2 × 2

④ हेक्सचर ओहलिन ने कहा कि

यह व्यापार के मध्य आंतरिक क्षेत्र में साधनों की गतिशीलता है।

⑤ विदेशी क्षेत्रों में व्यापार के क्रम में साधनों की गतिहीनता होती है।

⑥ मूल्य का श्रम सिद्धांत का विरोध किया है।

⑦ दो क्षेत्र श्रम और पूँजी प्रचुर क्षेत्रों की बात की है।

सिद्धांत -

हेक्सचर ओहलिन ने कहा था कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तभी संभव होगा जब लागतों में साधन गहन अंतर होगा। इसी संदर्भ में इन्होंने दो क्षेत्रों की बात की है जिसमें से एक क्षेत्र श्रम प्रचुर क्षेत्र है तो दूसरा क्षेत्र पूँजी प्रचुर क्षेत्र है।

- श्रम प्रचुर क्षेत्र -

श्रम प्रचुर क्षेत्र से आशय उस क्षेत्र से है जहाँ उत्पादन साधन के रूप में पूँजी की तुलना में श्रम की गहनता है अर्थात यह देश उन उत्पादों का उत्पादन करता है जिसके लिए श्रम की अधिक आवश्यकता होती है जबकि पूँजी की कम। इस क्षेत्र के लिए -

Physical Criteria → $\left(\frac{T_K}{T_L}\right)_A < \left(\frac{T_K}{T_L}\right)_B$

Do Not Write anything in this Portion

Price
Physical criteria → $\left(\frac{P_K}{P_L}\right)_A > \left(\frac{P_K}{P_L}\right)_B$

जहाँ A → एक देश (पूँजी प्रचुर)
B → दूसरा देश (श्रम प्रचुर)

पूँजी प्रचुर क्षेत्र

पूँजी प्रचुर क्षेत्र वह क्षेत्र होता है जहाँ वस्तुओं के उत्पादन में पूँजी उत्पादन साधन के रूप में मात्रिक प्रयोग होती है जबकि श्रम कम। इससे यह देश पूँजी प्रचुर साधन वाले वस्तुओं का उत्पादन करता है जबकि श्रम प्रचुर वस्तुओं का आयात करता है।

Physical criteria –

$$\left(\frac{T_K}{T_L}\right) > \left(\frac{T_K}{T_L}\right)$$

Price criteria –

$$\left(\frac{P_K}{P_L}\right) < \left(\frac{P_K}{P_L}\right)$$

जहाँ) –
A = पूँजी प्रचुर देश
B = श्रम प्रचुर देश।

हेक्सचर के सिद्धांतानुसार,

पूँजी प्रचुर

देश श्रम प्रचुर देशों को पूँजी प्रचुर वस्तुओं का निर्यात करे तथा श्रम प्रचुर पूँजी प्रचुर क्षेत्रों को, यदि श्रम प्रचुर वस्तुओं को निर्यात करे तो आर्थिक दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था बेहतर रूप से आगे बढ़ेगी तथा विकास सम्भव होगा।

उदा. → माना कोई देश A जो पूँजी प्रचुर है तथा B जो श्रम प्रचुर है तथा A देश 10 इकाई जूते का उत्पादन करता है जबकि 5 इकाई गेहूँ का उत्पादन करता है तथा देश B 5 इकाई जूते का उत्पादन करता है जबकि 10 इकाई गेहूँ का उत्पादन करता है तब -

देश	जूते (इकाई)	गेहूँ (इकाई)
A	10	5
B	5	10

इस स्थिति में A देश जोकि पूँजी प्रचुर है अतिरिक्त साधन जो गेहूँ में लग रहा है उसका प्रयोग भी जूते उत्पादन में करेगा तथा गेहूँ का आयात करेगा वहीं देश B जो श्रम प्रचुर है वह गेहूँ का उत्पादन करेगा जबकि अतिरिक्त श्रम जो जूते बनाने में लग रहा है उसका प्रयोग भी गेहूँ उत्पादन करेगा तथा जूते का आयात करेगा।

Do Not Write anything in this Portion

आलोचना -

हेक्सचर - ओहलिन सिद्धांत की आलोचनाएं निम्नलिखित हैं -

① इनका मानना था कि उत्पादन साधनों की विदेशी गतिशीलता नहीं है जबकि उत्पादन साधन आधुनिक तौर पर गतिशील हैं जिससे यह वर्तमान में लागू नहीं होता।

② यह सिद्धांत केवल 2 देशों के मध्य व्यापार की बात करता है। जबकि वास्तविक तौर पर व्यापार केवल 2 देशों के मध्य नहीं बल्कि अनेक देशों के मध्य होता है।

③ इस सिद्धांत की प्रमुख आलोचना यह है कि यह सिद्धांत पूंजी प्रचुरता तथा श्रम प्रचुरता के आधार पर दो क्षेत्रों में संसाधनों के प्रचुर दोहन पर तथा अनुकूलतम आवंटन पर रोक लगाती है।

④ लियोन्टीफ पैराडॉक्स - अर्थशास्त्री लियोन्तीफ ने इसी सिद्धांत के प्रतिरोध के रूप में लियोन्तीफ पैराडॉक्स दिया था जो कहता है आवश्यक नहीं है कि पूंजी प्रचुर देश पूंजीगत वस्तु ही निर्यातित करे वह श्रम प्रचुर वस्तु भी निर्यातित कर सकता है।

Paper Code

A	0	8	0	5	0	3	7

(5) फिर अंततः उन्होंने कहा कि केवल 2 वस्तुएं ही व्यापार में क्रम में आती है जोकि प्रासंगिक नहीं है।

इस प्रकार उपर्युक्त आलोचना के आधार पर हेक्सचर ओहलिन की वर्तमान प्रासंगिकता कम हो जाती है परंतु यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Do Not Write anything in this Portion